नथिंग फोन (4बी) की बिक्री शुरू

नई दिल्ली : लंदन स्थित कंज्यूमर टेक्नोलॉजी ब्रांड नथिंग ने अपने नए (बी) सीरीज के पहले स्मार्टफोन फोन (4बी) की बिक्री शुरू होने का ऐलान किया है। कंपनी ने कहा कि नथिंग इकोसिस्टम का अनुभव लेने का यह सबसे किफायती तरीका है। 8जीबी + 128जीबी वेरिएंट की प्रभावी शुरुआती कीमत 29,999 रुपये और 8जीबी + 256जीबी वेरिएंट की 33,699 रुपये रखी गई है।

इन कीमतों में 7.5% इंस्टेंट बैंक डिस्काउंट और एक्सचेंज बोनस शामिल हैं। फोन (4बी) की बिक्री 14 जुलाई, 2026 से फ्लिपकार्ट और प्रमुख रिटेल पार्टनर्स जैसे क्रोमा, रिलायंस डिजिटल और विजय सेल्स के स्टोर्स पर शुरू होगी। फोन (4a) सीरीज की कामयाबी को आगे बढ़ाते हुए फोन (4बी) में नथिंग का सिग्नेचर पारदर्शी डिज़ाइन और ग्लिफ इंटरफेस दिया गया है। इसके साथ दमदार स्नैपड्रैगन परफॉर्मेंस, हर तरह की ज़रूरतों के लिए मुफीद कैमरा सिस्टम , शानदार एमोलेड डिस्प्ले और एसेंशियल एआई टूल्स के साथ पूरा नथिंग ओएस एक्सपीरियंस मिलता है। नथिंग इकोसिस्टम में कदम रखने वाले यूज़र्स के लिए फोन (4बी) को एक बेहतरीन शुरुआती डिवाइस के तौर पर तैयार किया गया है। इसमें स्नैपड्रैगन 6 जेन 4 मोबाइल प्लेटफॉर्म, नथिंग की अब तक की सबसे बड़ी 6,000 एमएएच बैटरी, ट्रूलेंस इंजन 4 से लैस 50MP ओआईएस मेन कैमरा, 6.77 इंच का 120Hs सुपर एमोलेड डिस्प्ले और 2,000 निट्स (Nits) तक की पीक ब्राइटनेस दी गई है। इसके अलावा, फोन में एंड्रॉयड 16 पर आधारित नथिंग ओएस 4.1 मिलेगा, जो साफ-सुथरा सॉफ्टवेयर एक्सपीरियंस, बिल्ट-इन एसेंशियल एआई टूल्स और छह साल तक सिक्योरिटी अपडेट्स की सुविधा देता है। फोन (4बी) ब्लैक, व्हाइट और ब्लू रंगों में उपलब्ध होगा। यह दो कॉन्फिगरेशन 8जीबी + 128जीबी और 8जीबी + 256जीबी में बिक्री के लिए उपलब्ध है।

कोटक म्यूचुअल फंड की 'लेट्स सेव लाइव्स म्यूचुअली' पहल एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज

मुंबई, : कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड ने आज घोषणा की कि उसकी राष्ट्रव्यापी रक्तदान पहल को एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता दी गई है। यह उपलब्धि एक ही दिन में संगठन द्वारा सर्वाधिक रक्त इकाइयों के संग्रह के लिए दर्ज की गई है। कंपनी ने 114 रक्तदान केंद्रों पर सफलतापूर्वक कुल 3,471 यूनिट रक्त एकत्र किया, जिससे यह भारत के सबसे बड़े रक्तदान अभियानों में से एक बन गया।

इस बड़े पैमाने की पहल ने म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स और कर्मचारियों को एक साझा उद्देश्य के साथ जोड़ा - रक्तदान के माध्यम से जीवन बचाने में मदद करना। यह पहल कोटक म्यूचुअल फंड की वित्तीय कल्याण से परे सामाजिक प्रभाव बनाने और सामूहिक जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इस पहल पर टिप्पणी करते हुए कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड के प्रबंध निदेशक निलेश शाह ने कहा, 'कोटक म्यूचुअल फंड में हम मानते हैं कि मूल्य निर्माण केवल धन सृजन तक सीमित नहीं है। 'लेट्स सेव लाइव्स म्यूचुअली' हमारी इस सोच का प्रतिबिंब है कि सामूहिक प्रयास समाज में सार्थक बदलाव ला सकता है। हम दानदाताओं, स्वयंसेवकों, साझेदारों और हमारे विस्तृत इकोसिस्टम की अभूतपूर्व भागीदारी से विनम्र हैं, जिन्होंने इस नेक कार्य के लिए एकजुट होकर योगदान दिया। '

अपने विचार साझा करते हुए कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड के डिजिटल बिज़नेस, मार्केटिंग और एनालिटिक्स प्रमुख किंजल शाह ने कहा, 'इस पहल ने सहयोग और सामुदायिक भागीदारी की शक्ति को प्रदर्शित किया। कई शहरों में हजारों लोगों को एक मानवीय उद्देश्य के लिए एक साथ आते देखना हमारे लिए प्रेरणादायक है। यह हमारे उस संकल्प को मजबूत करता है कि हम ऐसी पहलों का निर्माण करें जो स्थायी सामाजिक प्रभाव पैदा करें। हम हर दानदाता और साझेदार के आभारी हैं जिन्होंने इस पहल को सफल बनाया। '

मान्यता पर टिप्पणी करते हुए एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के मुख्य संपादक डॉ. बिस्वारूप रॉय चौधरी ने कहा, 'कोटक म्यूचुअल फंड की 'लेट्स सेव लाइव्स म्यूचुअली' पहल इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि किस प्रकार एक कॉर्पोरेट-नेतृत्व वाली पहल अभूतपूर्व स्तर पर समुदायों को एकजुट कर सकती है। एक ही दिन में विभिन्न शहरों में हजारों यूनिट रक्त का संग्रह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है, जो असाधारण योजना, समन्वय और जनभागीदारी को दर्शाता है। हमें खुशी है कि इस उपलब्धि को 'एक दिन में संगठन द्वारा सर्वाधिक रक्त इकाइयों का संग्रह' शीर्षक के तहत एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। '

इस असाधारण उपलब्धि को मान्यता देते हुए एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने कोटक म्यूचुअल फंड को 'एक दिन में संगठन द्वारा सर्वाधिक रक्त इकाइयों का संग्रह' का खिताब प्रदान किया।

सितारे छूना चाहूँ

▶ सुधीर श्रीवास्तव
गोण्डा उत्तर प्रदेश

पढ़ाई में होशियार नवोदित धाविका सीता के सपने बड़े थे, मगर परिवार की माली हालत अच्छी नहीं थी। जूनियर वर्ग की प्रतियोगिताओं में उसके नाम की खूब चर्चा होती थी। पिता उसकी उपलब्धियों से जहाँ खुश तो थे, मगर अपनी आर्थिक हालात को देखते हुए परेशान भी रहते थे कि वे बिटिया के सपनों को उड़ान दें पाने में असमर्थ महसूस कर रहे थे।

सीता उम्र में अभी छोटी ही थी, मगर माँ की मौत और हालातों ने उसे समझदार बना दिया। उसके पड़ोसी गाँव की एक लड़की चंदा उसकी पक्की सहेली थी।वह भी सीता की सुख-दुख में शामिल रहती थी।एक दिन उसने अपने पिता से सीता के बारे में बताया, तब काफी सोच-विचार के बाद उन्होंने सीता और उसके पिता को अपने घर बुलाया और सीता को हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

सीता के पिता उनके कदमों में गिर पड़े, आपका यह अहसान कैसे चुका पाऊँगा। चंदा के पिता ने उन्हें उठाया, ढाँढस बंधाया, चिंता मत कीजिए। चंदा की तरह सीता भी आज से मेरी भी बेटी है है, अब उसे दो पिताओं का संरक्षण मिलेगा। चंदा भी चाहती है कि सीता के लिए मैं कुछ करूँ।

उन्होंने सीता के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा - तू बिल्कुल चिंता मत करा तू अपने सितारे छू सके उसके लिए मैं कुछ भी करूँगा, बस तू सितारों के छूने के जिद यत छोड़ना।कल की चिंता छोड़कर मेहनत कर। हम हर हाल में हमेशा तेरे साथ खड़े रहेंगे। कोई जरूरत या परेशानी हो, तो मुझसे कहना बेटा। अब तू और चंदा दोनों मेरी बेटियाँ हों। तुम दोनों की खुशी में ही हमारी खुशी है।

अपने पापा की बात सुनकर चंदा चहककर सीता से लिपट गई। सीता के पापा की आँखों में आँसू थे। हाथ जोड़कर उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। चंदा के पापा ने उन्हें खींचकर कर गले लगाते हुए कहा - अब हम दोनों सीता बेटी के सितारे छूने के पलों का इंतजार करेंगे। इतना सुनते ही सीता के पापा फफककर रो पड़े।

बच्चों,के खोने की समस्या से निपटने के लिए 5 महत्वपूर्ण बातें

मेलों /बाजार/किसी भी स्थान में बच्चों,के खोने की समस्या से निपटने के लिए नारी शक्ति संगठन, राजगढ़ (मध्य प्रदेश) अपने अभियानों, लाउडस्पीकर घोषणाओं और माता-पिता की बैठकों के माध्यम से बच्चों और अभिभावकों को निम्नलिखित 5 महत्वपूर्ण बातें सिखा सकता है :

1. **पहचान पत्र पास रखना (आईडेंटिटी कार्ड)**
   * जेब में पर्ची: बच्चे की जेब में एक पर्ची रखें।
   * जरूरी जानकारी: इस पर्ची पर माता-पिता का नाम, मोबाइल नंबर और राजगढ़ का स्थानीय पता साफ अक्षरों में लिखा हो।
   * बच्चों को जानकारी: बच्चे को पता होना चाहिए कि उसकी जेब में पापा या मम्मी का नंबर रखा है।
2. **पुलिस और सुरक्षाकर्मियों की पहचान**
   * वर्दी की पहचान: बच्चों को खाकी वर्दी वाले पुलिसकर्मियों, महिला पुलिस और मेले के सुरक्षा गार्डों (वॉलिंटियर्स) को पहचानना सिखाएं।
   * मदद मांगना: उन्हें सिखाएं कि खो जाने पर केवल वर्दी वाले अंकल/आंटी या 'नारी शक्ति संगठन' के वालंटियर्स के पास ही जाएं।
   * अपरिचितों से दूरी: किसी भी अन्य अनजान व्यक्ति के साथ कहीं भी जाने या उनके* हाथ से खाने की चीज लेने से साफ मना करें।
3. **'एक जगह खड़े रहने' का नियम (Freeze Rule)**
   * हिलना नहीं: बच्चों को सिखाएं कि जैसे ही उन्हें लगे कि माता-पिता का हाथ छूट गया है, वे वहीं रुक जाएं (भागें नहीं)।
   * ढूंढना आसान: भीड़ में दौड़ने से बच्चा और दूर निकल जाता है, एक जगह खड़े रहने से माता-पिता उसे जल्दी ढूंढ लेते हैं।
4. **सहायता केंद्र और लाउडस्पीकर बूथ**
   * मुख्य केंद्र: मेले में प्रवेश करते ही बच्चे को 'मेला पुलिस चौकी' या 'पूछताछ केंद्र' (लाउडस्पीकर बूथ) दिखाएं।
   * अनाउंसमेंट: बच्चे को बताएं कि अगर वो खो जाता है, तो इस बूथ पर जाकर अपना और माता-पिता का नाम लाउडस्पीकर से बोलवा सकता है।
5. **मोबाइल नंबर याद करवाना (अगर बच्चा थोड़ा बड़ा है)**
   * रट्टा लगवाना: 5 साल से बड़े बच्चों को माता या पिता का कम से कम एक चालू मोबाइल नंबर अच्छी तरह याद करवाएं।
   * राजगढ़ का नाम: बच्चे को अपने जिले 'राजगढ़' या अपने गांव/शहर का नाम स्पष्ट बोलना आना चाहिए।

नारी शक्ति संगठन के लिए
कुछ विशेष सुझाव (Action Plan)

* मेला स्टॉल: संगठन मेले के मुख्य द्वार पर एक 'नारी शक्ति सहायता डेस्क' लगा सकता है।
* सुरक्षा बैंड: मेले में आने वाले छोटे बच्चों के हाथ में संगठन की तरफ से एक वॉटरप्रूफ सुरक्षा बैंड (रिस्टबैंड) बांधा जा सकता है, जिस पर स्केच पेन से माता-पिता का नंबर लिखा हो।
* पॉकेट कार्ड वितरण: संगठन की महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर माताओं को जागरूक करने के लिए छोटे पर्चे बांट सकती हैं।

नारी शक्ति संगठन राजगढ़ मध्यप्रदेश

स्वर्ग, नरक और हम

▶ बकलम-अवनिश पंड्या,
▶ प्रस्तुति-जवाहर ठोसी पीयूष

मृत्यु के बाद स्वर्ग मिले— इस आशा में मनुष्य जीवन भर कितने जतन करता है।कोई व्रत रखता है,कोई दान-पुण्य करता है,कोई तीर्थों की यात्रा करता है,तो कोई भगवान से मन्नतें माँगता है।मानो स्वर्ग कोई नई हाउसिंग सोसायटी हो और वहाँ एक छोटा-सा फ्लैट पाने के लिए पुण्य अंक जमा करने पड़ते हों।

लेकिन कभी एक पल ठहरकर यह भी सोचिए... क्या हो,यदि हम पहले से ही स्वर्ग में रह रहे हों? सुबह उठिए और अपने चारों ओर नज़र दौड़ाइए।

एक बटन दबाते ही अंधेरा उजाले में बदल जाता है। दूसरा बटन दबाते ही पंखा चलने लगता है। तीसरा दबाते ही ठंडी हवा कमरा भर देती है। नल खोलते ही पानी बहने लगता है। गैस जलाते ही कुछ ही मिनटों में भोजन तैयार हो जाता है। जेब से मोबाइल निकाला और पूरी दुनिया आपकी हथेली पर आ गई।

हज़ारों किलोमीटर दूर बैठा आपका अपना कोई प्रिय व्यक्ति कुछ ही सेकंड में आपके सामने दिखाई देने लगता है। इतनी अद्भुत सुविधाएँ... और हम उन्हें इतना सामान्य मान बैठे हैं,जैसे ये हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हों।

ज़रा कल्पना कीजिए...

यदि दो सौ वर्ष पहले का कोई सम्राट आज आपके घर आ जाए,तो शायद वह लौटकर अपने महल जाना ही न चाहे।

वह आश्चर्य से पूछे–

'यह क्या है? '

'गर्म पानी। '

'और यह? '

'ठंडी हवा। '

'यह? '

'पूरी दुनिया की जानकारी। '

'और यह? '

'दस मिनट में घर तक पहुँचने वालाभोजन। '

वह शायद मुस्कुराकर कहे- 'मैंने जीवन भर राज्य किया,युद्ध जीते, अपार धन कमाया...लेकिन ऐसा सुख तो मुझे भी कभी नसीब नहीं हुआ। 'यही सच्चाई है।

आज का एक सामान्य व्यक्ति भी अनेक सुविधाओं के मामले में बीते समय के सबसे शक्तिशाली राजाओं से कहीं अधिक संपन्न है।

फिर भी... हम खुश नहीं हैं। क्यों? क्योंकि इंसान को जो मिल जाता है,उसकी कीमत धीरे-धीरे उसे कम लगने लगती है।

एसी चल रहा है–कोई खुशी नहीं। बंद हो जाए–परेशानी शुरू।

मोबाइल है–कोई खुशी नहीं। नेटवर्क चला जाए–मानो दुनिया ही खत्म हो गई।

अपना घर है–खुशी नहीं। पड़ोसी का घर बड़ा है–बस इसी से वही दुःखी है।

अपनी गाड़ी है–संतोष नहीं। दूसरे की गाड़ी बड़ी है–यही पीड़ा देती है।

यानी इंसान अपने ही स्वर्ग में खड़ा होकर, दूसरे के स्वर्ग से अपनी तुलना करता रहता है और दुःखी होता रहता है। लेकिन उसी धरती पर एक और दुनिया भी है...

जहाँ आज भी लाखों लोग एक बाल्टी पानी के लिए घंटों कतार में खड़े रहते हैं।

जहाँ लाखों परिवारों के पास पक्का घर नहीं है। जहाँ दो वक्त की रोटी भी निश्चित नहीं। जहाँ बच्चों के सपने स्कूल तक पहुँचने से पहले ही टूट जाते हैं।

जहाँ तन ढकने के लिए पूरे कपड़े भी नहीं हैं। हम जिन सुविधाओं को 'सामान्य' कहते हैं, वही किसी और की सबसे बड़ी आकांक्षा होती हैं। हमें एसी का रिमोट नहीं मिलता,तो गुस्सा आ जाता है।

उन्हें धूप से बचने के लिए पेड़ की छाँव भी नसीब नहीं होती। हम डाइट चार्ट खोजते हैं। वे अगली रोटी की चिंता में सोते हैं।

तभी लगता है...स्वर्ग और नरक मृत्यु के बाद मिलने वाले स्थान नहीं हैं।

वे यहीं हैं...

इसी धरती पर...

इसी शहर में...

इसी गली में...

और कभी-कभी तो एक ही दीवार के दो ओर। एक घर का बच्चा इसलिए उदास है कि उसका नया मोबाइल थोड़ा धीमा हो गया।

सामने वाले घर का बच्चा इसलिए उदास है कि उसके पास ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मोबाइल ही नहीं है। एक व्यक्ति शिकायत करता है कि गर्म पानी पाँच मिनट देर से आया। दूसरा केवल इतना चाहता है कि आज पानी मिल जाए।

फर्क केवल हालात का नहीं...फर्क नज़रिए का भी है। कुछ लोग कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराना जानते हैं। और कुछ लोग हर सुख-सुविधा के बीच भी शिकायतों से बाहर नहीं निकल पाते।

मनुष्य की सबसे विचित्र आदत यही है-वह हर दिन यह गिनता है कि उसके पास क्या नहीं है...लेकिन कभी यह नहीं गिनता कि उसके पास कितना कुछ है।

यदि हर रात सोने से पहले हम केवल पाँच बातें लिख दें-

आज मैं साँस ले पा रहा हूँ।

आज मेरे पास पीने का पानी है।

आज मुझे भोजन मिला।

आज मेरे पास सिर छिपाने की जगह है। आज मेरे अपने लोग मेरे साथ हैं। तो शायद हमारी पूरी ज़िंदगी बदल जाए।

शायद स्वर्ग कोई जगह नहीं..एक एहसास है। और नरक भी कोई जगह नहीं...बल्कि उस एहसास को भूल जाना है। जो हमारे पास है,उसकी कद्र करना ही स्वर्ग है। और जो मिला है,उसे भूलकर केवल शिकायत करते रहना ही नरक है। मृत्यु के बाद क्या होगा,यह किसी को नहीं पता।

लेकिन जब जीते-जी हमें पृथ्वी जैसा सुंदर ग्रह,साँस लेने के लिए हवा,पीने के लिए पानी,खाने के लिए अन्न,प्रेम करने वाले अपने लोग और एक बटन दबाते ही मिलने वाली अनगिनत सुविधाएँ प्राप्त हैं...

फिर भी यदि हम हर समय दुःखी रहें...तो इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है? शायद ऊपर बैठा ईश्वर भी मुस्कुरा रहा होगा और कहता होगा– 'मैंने तुम्हें स्वर्ग में भेजा था...और तुमने वहाँ भी शिकायतों का दफ़्तर खोल लिया! '

इसलिए आज से शिकायतें नहीं अपितु मन में कृतज्ञता का भाव रखिए।क्योंकि कृतज्ञ मन में ही स्वर्ग बसता है। स्वस्थ रहें,प्रसन्न रहें,सुखी रहें और सुखी रखें।

खबरदार ! कहीं ऑनलाइन गेम और ड्रॉ आपकी अच्छी-भली ज़िंदगी न छीन लें

▶ प्रतिक संघवी राजकोट

ऑफिस में लंच करने बैठा था और बात निकली एक सहकर्मी ने बताया की मेरी पहचान वाला लड़का गायब हे और कोई ऑनलाइन गेम में उसने 19 लाख रुपए चले गए। यह बात वहीं खत्म नहीं हुई जैसे ही बात निकली साथ में बैठे 6 में से 4 सह कर्मियों ने ऐसी घटना का जिक्र किया और उसमें से एक अपने खुद के 8000 रुपए खो के वही से अटक गया। और बहार निकल के सभी कर्मी को बताया और 1 सप्ताह में लिस्ट बनाने को कहा तो सिर्फ 12 कर्मियों के जान पहचान वाले 48 से ज्यादा लोग निकले जिसने ऑनलाइन ड्रॉ और गेम में पैसे गवाए हो किसीको कुछ नहीं मिला?!

आज मोबाइल पर हजारों ऑनलाइन गेम, लकी ड्रॉ, कैसीनो और इनाम देने वाले प्लेटफ़ॉर्म दिखाई देते हैं। आकर्षक विज्ञापन, बड़े-बड़े जैकपॉट, कुछ ही मिनटों में पैसा दोगुना होने के दावे और सोशल मीडिया पर जीत की कहानियाँ लोगों को अपनी ओर खींचती हैं।

लेकिन एक सवाल ज़रूर पूछिए-क्या जो हमें स्क्रीन पर दिखाई देता है, वही पूरी सच्चाई भी होती है? या स्क्रिप्टेड, सिर्फ़ एनिमेशन देखकर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए?!

जब कोई ऑनलाइन ड्रॉ या गेम चलता है, तो हमें घूमते हुए नंबर, चमकदार ग्राफिक्स, काउंटडाउन और विजेता घोषित होते दिखाई देते हैं। लेकिन केवल यह दृश्य देखकर यह साबित नहीं होता कि पूरी प्रक्रिया निष्पक्ष है। यदि किसी डिजिटल सिस्टम की कार्यप्रणाली सार्वजनिक नहीं है, उसका स्वतंत्र ऑडिट नहीं होता या उसकी निष्पक्षता की स्वतंत्र रूप से जाँच नहीं की जा सकती, तो केवल स्क्रीन पर दिख रही प्रक्रिया भरोसे का पर्याप्त आधार नहीं बनती। मैंने एक शैक्षणिक डेमो बनाया? जिसमें नंबर पहले से तय हो और वहीं परिणाम लाइव दिखे इस विषय को समझाने के लिए मैंने एक **शैक्षणिक डेमो** तैयार किया।उस डेमो में शुरुआत से ही स्पष्ट लिखा गया था कि परिणाम **पहले से तय** हैं और यह केवल शिक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। उसका उद्देश्य किसी गेम, ऐप या कंपनी पर आरोप लगाना नहीं था।

उसका उद्देश्य केवल यह दिखाना था कि:यदि कोई प्रणाली पारदर्शी न हो, तो केवल आकर्षक एनिमेशन देखकर उसकी निष्पक्षता सिद्ध नहीं की जा सकती। उसमें सब चीजें स्क्रिप्टेड हो जाती हे या कर सकते हे जो आपको लाइव दिखेगा। अगर कोई ड्रॉ की बात करे तो उसके पीछे की स्क्रिप्ट में सिर्फ

```
<script>const winners
= [112,8879,23838,7866,37363];
let inde& = 0;
```

यह कोड लगा दो तो विनर लाइव में पहले 5 यही नंबर क्रम से आयेंगे। और यह स्क्रिप्ट मैने सिर्फ 1 साल का डिप्लोमा कोर्स करके सिर्फ 2 घंटे में बना ली। साथमे अब इसी स्क्रिप्ट को यूज करके में कोई भी कॉन्टेस्ट या ड्रॉ का रिजल्ट सिर्फ 2 मिनिट में चयन कर दूंगा। लाइव में कोईभी आके ड्रॉ करे लेकिन स्क्रिप्ट के हिसाब से ही क्रम निकलेंगे।

इसे ही आप ऑनलाइन कोई भी गेम के कोडिंग बना सकते हो जिसमें 1 टेबल या एक गेम में बैठे कोई भी 1 व्यक्ति को जीतादो या सबसे बड़ी गेम उसको ही लगे या यूजर वाइज कोई रकम की लिमिट सेट करदो यह सब स्क्रिप्ट में आके लाइव चल शकता है। इसी कारण किसी भी ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर विश्वास करने से पहले उसके नियम, लाइसेंस, स्वतंत्र ऑडिट और शिकायत व्यवस्था की जानकारी लेना आवश्यक है।

लालच की शुरुआत, नुकसान का रास्ता-बहुत से लोग छोटी-सी जीत के बाद यह मान लेते हैं कि अब लगातार कमाई होगी। यह पूरी स्क्रिप्टेड गेम और ड्रॉ ऐसे ही चलते हे पहले आपको थोड़े समय के लिए तय रकम जिताती हे औरयहीं से जोखिम शुरू होता है।धीरे-धीरे कई लोग अपनी मेहनत की कमाई खो देते हैं।

कई परिवार आर्थिक तनाव, कर्ज और मानसिक परेशानी का सामना करते हैं।हर व्यक्ति की स्थिति अलग होती है, लेकिन यह याद रखना जरूरी है कि किसी भी जोखिम वाले खेल में पैसा लगाने से पहले उसके परिणामों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। और जैसे हर लोगो की परिषद अलग हे वैसे ही हर यूजर के लिए अलग स्क्रिप्ट भी होती हे जिसमें आप कुछ नहीं कर सकेंगे और यह ट्रेस करना भी अभी के समय में नामुमकीन जैसा ही हे।

बच्चों और युवाओं पर विशेष ध्यान दे-आज किशोर और युवा भी मोबाइल पर ऐसे प्लेटफ़ॉर्म तक आसानी से पहुँच जाते हैं। और कही के दिमाग में यह हे कि लाइव और ऑनलाइन गेम या ड्रॉ में कोई घोटाला नहीं हो सकता सब नजर के सामने होता हे। तो यही सोच सबसे गलत हे।जो में लाइव साबित भी करूंगा।

इसलिए माता-पिता और अभिभावकों को चाहिए कि:

* बच्चों से खुलकर बात करें।
* आसान कमाई के लालच के बारे में समझाएँ। * डिजिटल भुगतान पर निगरानी रखें।
* स्क्रीन टाइम और ऑनलाइन गतिविधियों पर ध्यान दें।

किसी भी ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर पैसा लगाने से पहले ये प्रश्न पूछिए

* क्या यह प्लेटफ़ॉर्म विधिसम्मत है?
* क्या इसकी प्रक्रिया पारदर्शी है?
* क्या इसका स्वतंत्र ऑडिट होता है?
* क्या विवाद होने पर शिकायत की व्यवस्था है?
* क्या नियम सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हैं?

यदि इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर नहीं मिलते, तो अतिरिक्त सावधानी बरतना ही समझदारी है।